वाड्मयं तपः

1. ***शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।***
   सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्॥ 1॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

शरद ऋतु में खिले हुए कमल के समान मुखवाली सब कुछ देने वाली सरस्वती हमारे मुख रूपी **कमल में सदैव** श्रेष्ठ कोष के रूप में समीप निवास करें।

अन्वयः (Prose-order)

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्॥ 1॥

शारद-अम्भोज-(*i*) .... सर्वदा शारदा (*ii*) .... वदन-अम्बुजे (*iii*) .... सन्निधिम् (*iv*) .... क्रियात्।

मञ्जूषा– | सत् निधिम्, वदना, अस्माकम्, सर्वदा |

उत्तराणि– (*i*) वदना (*ii*) अस्माकम् (*iii*) सर्वदा (*iv*) सत् निधिम्।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

शारदा–सरस्वती (Goddess of learning)। **शारद**– शरद्-ऋतौ, शरद ऋतु में (in the Antnmn season)। **अम्भोज**–कमलम्, कमल (Lotus)। **वदनम्**–मुखम्, मुँह (Mouth)। **सर्वदा**–सर्वं ददाति या सा, सब कुछ देने वाली (Giver of everything)। **सर्वदा**–सदैव, हमेशा (For ever)। **सन्निधिम्**–निवासम्, निवास (Near by place)। **सन्निधिम्**–समीपता, सामीप्य (Nearness)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्॥ 1॥

अर्थात्– सर्वदात्री, शरदर्तौ ***कमलम्*** इव मुखवती ***सरस्वती*** अस्माकं ***मुखकमले*** सदैव श्रेष्ठकोषस्य रूपे समीपम् निवासं कुर्यात्।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

वदनाम्बुजे	– वदन + अम्बुजे (दीर्घसन्धिः)।	**शारदाम्भोजवदना**	– शारद + अम्भोजवदना (दीर्घसन्धिः)।
सन्निधिं	– सत् + निधिम् (व्यञ्जनसन्धिः)।	**सर्वदाऽस्माकं**	– सर्वदा + अस्माकं।

प्रत्ययाः (Suffixes)

वदना	– वदन + टाप्	**शारदा**	– शारद + टाप्

समासाः (Compounds)

सर्वदा	– सर्वं ददाति या सा (बहुव्रीहिः)।	**वदनाम्बुजे**	– वदनम् अम्बुजम् इव, तस्मिन् (कर्मधारयः)।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) सर्वदा का अस्ति? (*ii*) सरस्वती कीदृशी अस्ति?

संस्कृते परिचयः (Introduction)

आचार्यः प्रियच्छात्राः ! स्वागतं सर्वेषां भवतां दशमकक्षायाम्।

छात्राः आचार्य ! किं दशमकक्षायाम् अपि मणिकामेव पठामः किल?

आचार्यः आम् ! मणिकामेव पठामः परन्तु अस्याः द्वितीयं भागम्।

छात्राः एवम् ! द्वितीयं भागम्। अत्र किं वैशिष्ट्यम्।

आचार्यः पठित्वा ज्ञायताम्। पाठान्ते दत्ताः प्रस्तावितक्रियाकलापाः अपि करणीयाः। पुस्तकान्ते दत्तानि गीतानि गीयन्ताम्। विनोद-कणिकाः पठित्वा ज्ञानवर्धनेन सहितं मनोरञ्जनमपि क्रियताम्।

छात्राः उत्सुकाः वयम् एतां पठितुम्।

आचार्यः सफलं भवतु युष्माकं ज्ञानमयं तपः। गायामः वयं मिलित्वा एव ऋग्वेदस्य एतां प्रार्थनां 'समानमस्तु वो मनः'...........

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

आचार्य प्यारे छात्रो ! आप सबका दशम कक्षा में स्वागत है।

छात्र आचार्य ! क्या दशम कक्षा में भी मणिका ही पढ़ेंगे?

आचार्य हाँ ! मणिका ही पढ़ रहे हैं किन्तु इसका दूसरा भाग।

छात्र ऐसा ! दूसरा भाग। यहाँ (दूसरे भाग में) क्या विशेषता है।

आचार्य पढ़कर जानें। पाठ के अन्त में दिए गए प्रस्तावित क्रियाकलाप भी करने चाहिए। पुस्तक के अन्त में दिए गए गीत गाएँ। विनोद-कणिकाएँ पढ़कर ज्ञानवर्धन के साथ-साथ मनोरंजन भी करें।

छात्र हम इसे पढ़ने के लिए उत्सुक हैं।

आचार्य तुम सबका ज्ञानरूपी तप सफल हो।
हम सब मिलकर ही गाते हैं
ऋग्वेद की इस प्रार्थना को 'हमारे मन समान हों'—

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(*i*) शारदा **सर्वदा** सन्निधिं क्रियात्।
(क) का (ख) कदा (ग) कुत्र (घ) काः

(*ii*) शारदा **वदनाम्बुजे** सन्निधिंक्रियात्।
(क) कुत्र (ख) के (ग) का (घ) कदा

(*iii*) **सर्वदा** शारदा मुखकमले निवासं क्रियात्।
(क) का (ख) काः (ग) कीदृशी (घ) किम्

(*iv*) शारदा **अस्माकं** वदनाम्बुजे निवासं कुर्यात।
(क) केषाम् (ख) काम् (ग) किम् (घ) कम्

उत्तराणि– (*i*) (ख) कदा (*ii*) (क) कुत्र (*iii*) (ग) कीदृशी (*iv*) (क) केषाम्।

विपर्ययचयनम्–

(*i*) **सर्वदा** – दूरम् (*ii*) **सन्निधिं** – सर्वग्रहीता (*iii*) **सर्वदा** – कदाचित्

उत्तराणि– (*i*) कदाचित् (*ii*) दूरम् (*iii*) सर्वग्रहीता।

भावार्थ लेखनम्–

शरद ऋतौ विकसितं **कमलम्** इव मुखवती **सर्वदात्री** सरस्वती अस्माकं मुखकमलस्य **समीपम्** सदैव सत् निधिरूपे **निवासं** कुर्यात्।

2. *अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति!*
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात्॥ 2॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

हे सरस्वती ! आपका यह कोष कोई अपूर्व (कोष) है, जो व्यय करने से निरन्तर बढ़ता है और एकत्रित करने से क्षीणता को प्राप्त होता है।

अन्वयः (Prose-order)

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति!
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात्॥ 2॥

(*i*) .... तव अयम् कोशः कः अपि (*ii*) .... विद्यते। व्ययतः वृद्धिम् (*iii*) ....

सञ्चयात् (*iv*) .... आयाति।

मञ्जूषा– | आयाति, भारति !, अपूर्वः, क्षयम् |

उत्तराणि– (*i*) भारति ! (*ii*) अपूर्वः (*iii*) आयाति (*iv*) क्षयम्

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

अपूर्वः–अद्वितीयः अनोखा (Special)। **विद्यते**–अस्ति, है (Is)। **आयाति**–प्राप्नोति, प्राप्त करता है (Gets)। **क्षयम्**–विनाशम् न्यूनताम्, घटता है (Destruction)। **भारति**–सरस्वति ! ज्ञान की देवी (Goddess of knowledge)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति!
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात्॥ 2॥

हे ***सरस्वति***! भवत्याः अयं ज्ञानकोषः कोऽपि ***अपूर्वः*** कोषः अस्ति। यः व्ययकरणाम् निरन्तरं वर्धते संग्रहकरणात् च ***क्षीणताम्*** आप्नोति। एतदेव अस्याः कोषस्य विचित्रता वर्तते।

समासाः (Compounds)

अपूर्वः – न पूर्वः (नञ् तत्पुरुषः)।

प्रत्ययाः (Suffixes)

व्ययतः – व्यय + तसिल्।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

कोऽपि – कः + अपि (पूर्वरूपसन्धिः)।
कोशोऽयम् – कोशो + अयम् (पूर्वरूप सन्धिः), कोशः + अयम् (विसर्गसन्धिः)।
सञ्चयात् – सम् + चयात् (परसवर्ण सन्धिः)।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) भारत्याः कोशः कीदृशः वर्तते?
(*ii*) 'अस्ति' इत्यर्थे अत्र किम् क्रियापदम् प्रयुक्तम्?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) सरस्वत्याः कोशः कथं क्षयम् आयाति?
(*ii*) 'क्षयमायाति' अत्र सन्धिः अस्ति वर्णसंयोगो वा?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'तव' इति सर्वनामपदस्य प्रयोगः कस्यै अभवत्?
(क) कौशाय (ख) अपूर्वाय (ग) भारत्यै (घ) धनाय

(*ii*) क्षयम इति पदस्य विपर्यय किम्?
(क) वृद्धिम् (ख) सञ्चयात् (ग) व्ययतः (घ) अपूर्वः

(*iii*) अस्मिन् श्लोक सम्बोधनपद किम्?
(क) भारति (ख) अपूर्वः (ग) वृद्धिम् (घ) क्षयम्

(*iv*) 'आयाति' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?
(क) भारति (ख) अपूर्वः (ग) व्ययतः (घ) कोशः

उत्तराणि– (I) (*i*) अपूर्वः। (*ii*) विद्यते।
(II) (*i*) सरस्वत्याः कोशः सञ्चयात् क्षयम् आयाति। (*ii*) 'क्षयमायाति' अत्र वर्णसंयोगः अस्ति।
(III) (*i*) (ग) भारत्यै। (*ii*) (क) वृद्धिम्। (*iii*) (क) भारति। (*iv*) (घ) कोशः।

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(*i*) भारत्याः कोशः **सञ्चयात्** क्षयम् आयाति।
(क) कथम् (ख) केन (ग) किम् (घ) कथा

(*ii*) व्ययतः **वृद्धिं** आयाति।
(क) कम् (ख) काम् (ग) किम् (घ) कः

(*iii*) अयं कोशः **अपूर्वः** विद्यते।
(क) कथम् (ख) कः (ग) कदा (घ) कीदृशाः

(*iv*) **भारत्याः** कोशः विचित्रः विद्यते।
(क) काः (ख) कस्य (ग) कस्याः (घ) कस्मात

उत्तराणि– (*i*) (क) कथम् (*ii*) (ग) किम् (*iii*) (घ) कीदृशः (*iv*) (ग) कस्याः।

3. *नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।*
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्॥ 3॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है। सत्य के समान कोई तप नहीं है। राग (मोह) के समान कोई दुःख नहीं है और त्याग के समान कोई सुख नहीं है।

अन्वयः (Prose-order)

नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्॥ 3॥

विद्यासमम् (i) .... न अस्ति, (ii) .... तपः न अस्ति। रागसमम् (iii) .... न अस्ति, (iv) .... सुखम् न अस्ति।

मञ्जूषा– | दुःखम्, चक्षुः, सत्यसमम्, त्यागसमम् |

उत्तराणि– (i) चक्षुः (ii) सत्यसमम् (iii) दुःखम् (iv) त्यागसमम्।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

चक्षुः–नेत्रम्, आँख (Eye)। **नास्ति**–न विद्यते, नहीं है (Is not)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्॥ 3॥

अस्मिन् संसारे **विद्यया** समम् किमपि नेत्रम् न वर्तते। **सत्येन** समं किमपि **तपः** न अस्ति। रागेण समम् किमपि **दुःखं** न **भवति**। एवमेव त्यागेन समम् किमपि सुखम् न अस्ति। अतः अस्माभिः सदैव **विद्याप्राप्त्यर्थं** सत्यसंपादनार्थं च प्रयत्नः करणीयः। एवमेव रागविमुक्तये त्यागार्थं च सचेष्टः भवेत्।

समासाः (Compounds)

विद्यासमम् – विद्यया समम् (तत्पुरुष समासः)। **सत्यसमम्** – सत्येन समम् (तत्पुरुष समासः)।
रागसमम् – रागेण समम् (तत्पुरुष समासः)। **त्यागसमम्** – त्यागेन समम् (तत्पुरुष समासः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

नास्ति – न + अस्ति (दीर्घसन्धिः)।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–
(*i*) विद्यासमं किम् नास्ति? (*ii*) 'दुःखं केन समं नास्ति?'

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–
तपः केन समम् अस्ति?

(III) भाषिककार्यम्–
(*i*) 'नयनम्' इत्यर्थे अत्र श्लोके किम् पदम् प्रयुक्तम्?
(क) नेत्रं (ख) चक्षुः (ग) अक्षि (घ) तपः
(*ii*) 'चक्षुः' इति पदम् कस्मिन लिङ्गे अस्ति?
(क) पुल्लिङ्गे (ख) स्त्रीलिङ्गे (ग) नपुंसकलिङ्गे (घ) कस्मिंश्चिल्लिङ्गे न
(*iii*) 'तपः' इति पदे कः मूलशब्दः?
(क) तपस् (ख) तपः (ग) तप (घ) तपसः
(*iv*) 'रागः' इति पदस्य विपर्ययपदं किम्?
(क) सत्य (ख) चक्षुः (ग) त्यागः (घ) सुखम्

उत्तराणि– (I) (*i*) चक्षुः। (*ii*) रागेण।
(II) तपः सत्यसमम् अस्ति।
(III) (*i*) (ख) चक्षुः। (*ii*) (ग) नपुंसकलिङ्गे। (*iii*) (क) तपस्। (*iv*) (ग) त्यागः।

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(*i*) विद्यासमं **चक्षुः** नास्ति।

(क) कः (ख) किम् (ग) कम् (घ) का

(*ii*) **सत्य** समं तपः नास्ति।

(क) केन (ख) कः (ग) का (घ) किम्

(*iii*) **राग** समं दु:खं नास्ति।

(क) कः (ख) किम् (ग) का (घ) केन

(*iv*) त्यागसमं **सुखं** नास्ति।

(क) कम् (ख) का (ग) काम् (घ) किम्

उत्तराणि– (*i*) (ख) किम् (*ii*) (क) केन (*iii*) (घ) केन (*iv*) (घ) किम्

शब्दार्थमेलनम्–

(*i*) चक्षुः – त्यजनम् (*ii*) रागः – नेत्रम् (*iii*) त्यागः – मोहः

उत्तराणि– (*i*) नेत्रम् (*ii*) मोहः (*iii*) त्यजनम्

4. न तथा शीतलसलिलं न चन्दनरसो न शीतला छाया।
प्रह्लादयति च पुरुषं, यथा मधुरभाषिणी वाणी॥ 4॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

न जल उतना ठण्डा होता है और न ही चन्दन का रस तथा न ही शीतल छाया उतनी ठण्डी होती है जितनी कि मनुष्य की मधुर **वा**णी मनुष्य को मधुरता / शीतलता (प्रसन्नता) प्रदान करती है।

अन्वयः (Prose-order)

न तथा शीतलसलिलं न चन्दनरसो न शीतला छाया।
प्रह्लादयति च पुरुषं, यथा मधुरभाषिणी वाणी॥ 4॥

यथा (i) .... वाणी पुरुषम् (ii) .... तथा शीतल-सलिलम् न, (iii) .... न, शीतला (iv) .... च न (प्रह्लादयति)।

मञ्जूषा– | चन्दनरसः, छाया, प्रह्लादयति, मधुरभाषिणी |

उत्तराणि– (i) मधुरभाषिणी, (ii) प्रह्लादयति (iii) चन्दनरसः (iv) छाया।

शब्दार्थाः (Word–meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

सलिलं–जलम्, पानी (Water)। **प्रह्लादयति**–आनन्दयति, प्रसन्न करती है (Make happy)। **मधुरभाषिणी–**मृदुवादिनी, मीठा बोलने वाली (One who speaks sweet)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

न तथा शीतलसलिलं न चन्दनरसो न शीतला छाया।
प्रह्लादयति च पुरुषं, यथा मधुरभाषिणी वाणी॥ 4॥

न तु शीतलं जलमेव न चन्दनस्य रसः न **शीतला** छाया च मनुष्यं तथा **आनन्दयति** यथा मृदुभाषिणी **वाणी** पुरुषं प्रसन्नं करोति। अर्थात् **मधुरभाषिणीं** वाणीं श्रुत्वा मनुष्यस्य मनः अपूर्वां शीतलताम् शान्तिम् च अधिगच्छति। अतः सदैव मधुरां वाणीम् एव वदेत्।

समासा: (Compounds)

शीतलसलिलं – शीतलं सलिलं (कर्मधारय:)।
चन्दनरस: – चन्दनस्य रस: (षष्ठी तत्पुरुष:)।
शीतला छाया – शीतलच्छाया (कर्मधारय:)।

प्रत्यया: (Compounds)

मधुरभाषिणी – मधुरभाषिन् + ङीप्।
शीतला – शीतल + टाप्।

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) शीतला का भवति? (*ii*) मधुरभाषिणी का भवति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) कीदृशं सलिलम् अपि पुरुषं न प्रह्लादयति? (*ii*) पुरुषं का आनन्दयति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'आनन्दयति' इति अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) प्रह्लादयति (ख) प्रसीदयति (ग) सीदति (घ) प्रसादयति

(*ii*) 'शीतला छाया' इति अनयो: पदयो: विशेषणपदं किम्?
(क) छाया (ख) शीतल (ग) शीतला (घ) शीतलम्

(*iii*) 'मधुरभाषिणी' इति पदे क: प्रत्यय:?
(क). शतृ (ख) इम् (ग) ङीप् (घ) ईन्

(*iv*) 'तथा' इति अव्ययस्य विलोमपदम् किम्?
(क) यथा (ख) कुत: (ग) कुत्र: (घ) न

उत्तराणि– (I) (*i*) छाया/वाणी। (*ii*) वाणी।
(II) (*i*) शीतलं सलिलम् अपि पुरुषं न प्रह्लादयति। (*ii*) पुरुषं मधुरवाणी आनन्दयति।
(III) (*i*) (क) प्रह्लादयति। (*ii*) (ग) शीतला। (*iii*) (ग) ङीप्। (*iv*) (क) यथा।

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(*i*) **शीतला** छाया अपि पुरुषं न प्रह्लादयति।
(*ii*) मधुरभाषिणी वाणी एव **पुरुषं** प्रह्लादयति।
(*iii*) शीतलं **सलिलं** भवति।

उत्तराणि– (*i*) कीदृशी (*ii*) कम् (*iii*) किम्

5. शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा।
ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणा:॥ 5॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

सुनने की इच्छा, सुनना, ग्रहण करना तथा धारण करना, पक्ष में तर्क करना, विपक्ष में तर्क करना, अर्थविज्ञान और तत्त्वज्ञान ये बुद्धि के गुण हैं।

अन्वय: (Prose-order)

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा।
ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणा:॥ 5॥

शुश्रूषा, (i) .... च एव, (ii) .... तथा धारणम्, ऊह-(iii) .... , अर्थविज्ञानम्, तत्त्वज्ञानम् च (iii) .... भवन्ति।

मञ्जूषा– | अपोह, धीगुणा:, श्रवणम्, ग्रहणम् |

उत्तराणि– (i) श्रवणम् (ii) ग्रहणम् (iii) अपोह (iv) धीगुणा:।

शब्दार्था: (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

शुश्रूषा—श्रोतुम् इच्छा, सुनने की इच्छा (Desire of listening)। **ऊहापोह:**—तर्क-वितर्कों, पक्ष में तर्क और विपक्ष में तर्क (Arguments)। **धीगुणा:**—बुद्धे: गुणा:, बुद्धि के गुण (Quality of wisdom)।

संस्कृते भावार्थ: (Summary)

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा।
ऊहापोहार्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणा:॥ 5॥

अस्मिन् श्लोके उत्तमबुद्धे: **अष्टगुणा:** वर्णिता: सन्ति। **यथा**– श्रोतुम् इच्छा (शुश्रूषा) श्रवणम्, ग्रहणम्, धारणम्, **पक्षे तर्क:** (ऊह:), विपक्षे तर्क: (अपोह:) **अर्थस्य विशुद्धं ज्ञानम्** (अर्थविज्ञानम्) **यथार्थज्ञानम्** (तत्त्वज्ञानम्) च। सा बुद्धि: एव **उत्कृष्टा** भवति यस्माम् उपरिलिखिता: **गुणा:** भवन्ति।

समासा: (Compounds)

अर्थविज्ञानम् – अर्थस्य विज्ञानम् (षष्ठी तत्पुरुष:)।
धीगुणा: – धिय: गुणा: (षष्ठी तत्पुरुष:)।
तत्त्वज्ञानम् – तत्त्वस्य ज्ञानम् (षष्ठी तत्पुरुष:)।

प्रत्यया: (Suffixes)

ग्रहणम् – ग्रह् + ल्युट्। **धारणम्** – धृ + ल्युट्। **श्रवणम्** – श्रु + ल्युट्।

सन्धि-विच्छेद: (Disjoin Sandhi)

चैव – च + एव (वृद्धि सन्धि:)
ऊहापोहार्थविज्ञानम् – ऊह + अपोह + अर्थविज्ञानम् (दीर्घ सन्धि:)

प्रश्ना: (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) प्रथम: धीगुण: क: अस्ति? (*ii*) धिय: तृतीय: गुण: क: अस्ति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

(*i*) धीगुणा: कति सन्ति? (*ii*) श्लोके के विपर्ययद्वयं प्रयुक्तम्?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'श्रोतुम् इच्छा' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) श्रवणम् (ख) ग्रहणं (ग) धारणं (घ) शुश्रूषा

(*ii*) ऊह: इति पदस्य अर्थ: 'पक्षे तर्क:' अस्ति 'विपक्षे तर्क:' वा?
(क) विपक्षे तर्क: (ख) पक्षे तर्क: (ग) पक्षे (घ) विपक्षे

(*iii*) 'चैव' इति पदस्य सन्धिच्छेद कृत्वा लिखत।
(क) च + एव् (ख) च + एव (ग) च + इव (घ) चा + ऐव

(*iv*) 'अर्थानाम् विशुद्धम् ज्ञानम्' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) अर्थ ज्ञानम (ख) अर्थ विज्ञानम् (ग) ऊह: (घ) अपोह:

उत्तराणि– (I) (*i*) शुश्रूषा। (*ii*) ग्रहणं।
(II) (*i*) धीगुणा: अष्ट सन्ति। (*ii*) श्लोके ऊह:-अपोह: इति विपर्ययद्वयं प्रयुक्तम्।
(III) (*i*) (घ) शुश्रूषा। (*ii*) (ख) पक्षे तर्क:। (*iii*) (ख) च + एव। (*iv*) (ख) अर्थविज्ञानम्।

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(*i*) धिय: **अष्ट** गुणा: सन्ति।
(क) क: (ख) के (ग) कति (घ) का:

(*ii*) धिय: अष्टम: गुण: **तत्वज्ञानं** वर्तते।
(क) किम् (ख) कम् (ग) काम् (घ) क:

(*iii*) एते **धिय:** गुणा: सन्ति।
(क) क: (ख) कस्य (ग) का: (घ) कस्या:

(*iv*) धिय: चतुर्थ: गुण: **ऊह:** अस्ति।
(क) क: (ख) किम् (ग) काम् (घ) कम्

(*v*) धिय: **सप्तम:** गुण: अर्थविज्ञानं वर्तते।
(क) क: (ख) का: (ग) कतम: (घ) किम्

उत्तराणि– (*i*) (ग) कति (*ii*) (क) किम् (*iii*) (घ) कस्या: (*iv*) (क) क: (*v*) (ग) कतम:।

अर्थमेलनम्–

(*i*) शुश्रूषा - विपक्षे तर्क: (*ii*) ऊह: - श्रोतुमिच्छा (*iii*) धीगुणा: - विशेषज्ञानं
(*iv*) अपोह: - बुद्धे: गुणा: (*v*) विज्ञानम् - पक्षे तर्क:

उत्तराणि– (*i*) शुश्रूषा - श्रोतुमिच्छा (*ii*) ऊहः - पक्षे तर्कः (*iii*) धीगुणाः - बुद्धेः गुणाः
(*iv*) अपोहः - विपक्षे तर्कः (*v*) विज्ञानम् - विशेषज्ञानं

6. *माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।*
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥ 6॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

मिठास, स्पष्ट उच्चारण, पदों को तोड़कर बोलना, अच्छे स्वर से बोलना, धैर्य और लय से बोलने में समर्थ, ये छः पाठकों के गुण हैं।

अन्वयः (Prose-order)

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥ 6॥

माधुर्यम्, (i) .... पदच्छेदः तु (ii) .... धैर्यम् (iii) ....
च एते (iii) .... पाठकगुणाः (सन्ति)।

मञ्जूषा– लयसमर्थम्, षट्, सुस्वरः, अक्षरव्यक्तिः

उत्तराणि– (i) अक्षरव्यक्तिः, (ii) सुस्वरः (iii) लयसमर्थम् (iv) षट्।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

माधुर्यम्–मधुरता, मिठास (Sweetness)। **सुस्वरः–**शोभनः स्वरः, अच्छा स्वर (Melodious voice)। **अक्षर व्यक्तिः–**स्पष्टं कथनम्, स्पष्ट बोलना (Clear Voice)। **पदच्छेदः–**पदानां विच्छेदं कृत्वा कथनम्, पदों को तोड़कर बोलना (Words Disjoining)। **धैर्यम्–**धीरताम्, धैर्यपूर्वक (Patience)। **लयसमर्थं–**लयेन सह उच्चारणं, लय के साथ उच्चारण करना (with flow)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

माधुर्यमक्षरव्यक्तिः पदच्छेदस्तु सुस्वरः।
धैर्यं लयसमर्थं च षडेते पाठका गुणाः॥ 6॥

अस्मिन् श्लोके **पाठकानां** षड्गुणाः कथिताः सन्ति। सः एव उत्तमः पाठकः मन्यते यस्मिन् एते गुणाः पठनसमये **सम्मिलिताः** सन्ति– **माधुर्यम्** अर्थात् मधुरता, अक्षरव्यक्तिः अर्थात् वर्णानाम् **स्पष्टतया** उच्चारणम्, **पदच्छेदः**, सुष्ठु स्वरः, **धैर्यम्**, लयसमर्थं च। अर्थात् पाठकाः भाषां मधुरतया पठेयुः, वर्णानाम् स्पष्टतया उच्चारणं कुर्युः, पदानाम् विच्छेदं कृत्वा पठेयुः, पठने सुष्ठु स्वरः स्यात्, धैर्यं कदापि न त्यजेयुः, आरोहावरोहक्रमानुसारं च पठेयुः। तदैव भाषायाः शोभा भवति।

समासाः (Compounds)

अक्षरव्यक्तिः	– अक्षराणाम् व्यक्तिः (षष्ठी तत्पुरुषः)।	**सुस्वरः**	– शोभनः स्वरः (कर्मधारयः)।
पदच्छेदः	– पदानाम् छेदः (षष्ठी तत्पुरुषः)।	**पाठका गुणाः**	– पाठकानाम् गुणाः (षष्ठी तत्पुरुषः)।
लयसमर्थम्	– लये समर्थम् (सप्तमी तत्पुरुषः)।		

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

पदच्छेदस्तु – पद + छेदः (तुगागम सन्धिः)+ तु (विसर्गसन्धिः)।
षडेते – षट् + एते (जश् सन्धिः)।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) पाठक-गुणाः कति सन्ति? (*ii*) 'षडेते' अत्र सन्धिः वर्णसंयोगो वा?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

प्रथमः पाठकगुणः कः अस्ति?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'मधुरता' इत्यर्थे किम् पदम् श्लोके प्रयुक्तम्?
(क) मधुरं (ख) माधुर्यम् (ग) मप्रः (घ) मधुरा

(*ii*) 'वर्णानाम् स्पष्टतया उच्चारणम्' इति अर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) अक्षर व्यक्तिः (ख) अक्षर : (ग) व्यक्तिः (घ) सुस्वरः

(*iii*) 'सुष्ठु ध्वनिः' इति स्थाने कि पदं प्रयुक्तम्?
(क) स्वरः (ख) पदच्छेदः (ग) सुस्वरः (घ) धैर्यम्

(*iv*) श्लोकात् एकम् अव्ययं चित्वा लिखत–
(क) धैर्य (ख) च (ग) षट् (घ) षडेते

उत्तराणि– (I) (*i*) षट्। (*ii*) सन्धिः।
(II) (*i*) प्रथमः पाठकगुणः माधुर्यम् अस्ति।
(III) (*i*) (ख) माधुर्यम् (*ii*) (क) अक्षरव्यक्तिः (*iii*) (ग) सुस्वरः (*iv*) (ख) च।

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(*i*) एते **षट्** पाठकगुणाः सन्ति।

(क) कः (ख) के (ग) का (घ) कति

(*ii*) प्रथमः गुणः **माधुर्यम्** अस्ति।

(क) किम् (ख) कम् (ग) काम् (घ) काः

(*iii*) **सुस्वरः** चतुर्थः गुणो वर्तते।

(क) काः (ख) के (ग) कौ (घ) कः

(*iv*) **लयसमर्थं** पाठकानाम् गुणो वर्तते।

(क) कम् (ख) किम् (ग) काम् (घ) काः

उत्तराणि– (*i*) (घ) कति (*ii*) (क) किम् (*iii*) (घ) कः (*iv*) (ख) किम्

विपर्ययचयनम्–

(*i*) कटुता - शिक्षकाणाम्

(*ii*) सुस्वरः - व्यग्रता

(*iii*) पाठकानाम् - दुर्गुणाः

(*iv*) गुणाः - दुर्वचनम्

(*v*) धैर्यम् - माधुर्यम्

उत्तराणि– (*i*) माधुर्यम् (*ii*) दुर्वचनम् (*iii*) शिक्षकाणाम् (*iv*) दुर्गुणाः (*v*) व्यग्रता।

7. *आचार्यत्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।*
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः॥ 7॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

शिष्य (शिक्षा का) एक चौथाई भाग अपने गुरु से ग्रहण करता है, एक चौथाई भाग अपनी बुद्धि से, एक चौथाई भाग समय से सीखता है और एक चौथाई भाग सहपाठियों से ग्रहण करता है।

अन्वयः (Prose-order)

आचार्यत्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः॥ 7॥

शिष्यः, (i) .... पादम् आदत्ते। (शिष्यः) स्वमेधया (ii) .... (अ), (शिष्यः) (iii) .... पादम् आदत्ते, (शिष्यः) सब्रह्मचारिभिः प।८·।, (iii) .... ।

मञ्जूषा– | कालेन, आचार्यात्, पादम्, आदत्ते। |

उत्तराणि– (i) आचार्यात् (ii) पादम् (iii) कालेन (iv) आदत्ते।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

आचार्यात्–गुरोः, गुरु से (From the teacher)। **पादं**–चतुर्थांशम्, चौथा भाग; 1/4 (One fourth)। **सब्रह्मचारिभिः**–सहपाठिभिः, सहपाठियों से (From his classmates)। **स्वमेधया**–स्वबुद्ध्या, अपनी बुद्धि से। **कालेन**–समयेन, समय से (From the time)। **आदत्ते**–ग्रह्णाति, ग्रहण करता है (To take)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

आचार्यत्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः॥ 7॥

शिष्यस्य **शिक्षाप्राप्तेः** चत्वारि साधनानि सन्ति। सः शिक्षायाः प्रथमं चतुर्थांशं **आचार्यात्** प्राप्नोति। द्वितीयं चतुर्थांशम् च **स्वमेधया** लभते। एवमेव तृतीयं चतुर्थांशं **समयक्रमेण** प्राप्नोति शेषं चतुर्थांशं च **सब्रह्मचारिभिः** प्राप्नोति।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) कः स्वमेधया शिक्षां गृहणाति? (*ii*) शिक्षायाः तृतीयः चतुर्थांशः कस्मात् गृहयते?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

आचार्यात् कियत् भागम् आदत्ते?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'निज' इत्यर्थे अत्र किं पदं प्रयुक्तम्?

(क) पादं (ख) स्व (ग) स्वमेधया (घ) कालेन

(*ii*) 'आदत्ते' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?

(क) शिष्यः (ख) गुरुः (ग) आचार्यः (घ) पादम्

(*iii*) 'पादम्' इति पदस्य अर्थ प्रसंगानुसार लिखत।

(क) चतुर्थांशम् (ख) पादपः (ग) चरणम् (घ) पादपद्मम्

(*iv*) सहपाठिभिः इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम्?

(क) मित्रैः (ख) ब्रह्मचारिभिः (ग) सब्रह्मचारिभिः (घ) मेधया

उत्तराणि– (I) (*i*) शिष्यः। (*ii*) कालेन।

(II) (*i*) आचार्यात् पादम् आदत्ते।

(III) (*i*) (ख) स्व। (*ii*) (क) शिष्यः। (*iii*) (क) चतुर्थांशम्। (*iv*) (ग) सब्रह्मचारिभिः।

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(*i*) शिष्यः **आचार्यात्** पादम् ग्रहणाति। (*ii*) **शिष्यः** स्वमेधया ज्ञानं ग्रहणाति।

(*iii*) **कालेन** तृतीयं पादं ग्रहणाति। (*iv*) शिष्यः चतुर्थं पादं **स्वमित्रैः** ग्रहणाति।

(*v*) संसारे ज्ञानस्य **चत्वारः** पादाः भवन्ति।

उत्तराणि– (*i*) कस्मात् (*ii*) कः (*iii*) केन (*iv*) कैः (*v*) कति।

समुचितम् अर्थचयनम्–

(*i*) शिक्षकात्	– ग्रहणाति	(*iii*) मेधया	– समयेन	(*v*) सब्रह्मचारिभिः	– बुद्ध
(*ii*) पादम्	– मित्रैः	(*iv*) आदत्ते	– आचार्यात्	(*vi*) कालेन	– चतुर्थांशम्

उत्तराणि– (*i*) आचार्यात् (*ii*) चतुर्थांशम् (*iii*) बुद्धया (*iv*) ग्रहणाति (*v*) मित्रैः (*vi*) समयेन।

8. *अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।*
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥ 8॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

जो वाक्य (वाणी) उद्वेग न उत्पन्न करने वाला हो, सत्य, प्रिय और कल्याणकारी हो तथा अच्छे ग्रन्थों का स्वाध्याय और उसका अभ्यास वाणी के तप कहलाते हैं।

अन्वयः (Prose-order)

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥ 8॥

यत् वाक्यम्, (i) .... सत्यम् (ii) .... च (तथा) स्वाध्याय (iii) .... च एव (iv) .... तपः उच्यते।

मञ्जूषा– वाङ्मयं, अनुद्वेगकरम्, अभ्यसनम्, प्रियहितम्

उत्तराणि– (i) अनुद्वेगकरम् (ii) प्रियहितम् (iii) अभ्यसनम् (iv) वाङ्मयं।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

अनुद्वेगकरम्–न उद्वेगकरम्, पीड़ारहित (Painless)। **अभ्यसनं**–अभ्यासम्, अभ्यास (Practise)। **वाङ्मयं**–वाचिकम्, वाणीरूपी (Literature)। **उच्यते**–कथ्यते, कहा जाता है (To be said)। **हितम्**–हितकारकं, हितकारी। **स्वाध्याय**–अध्ययनाम् पढ़ाई (Study)। **वाक्यम्**–वचनम्, वचन (Sentence)।

शब्दार्थाः (Word-meanings Sanskrit to Sanskrit, Hindi and English)

अनुद्वेगकरम्–न उद्वेगकरम्, पीड़ारहित (Painless)। **अभ्यसनं**–अभ्यासम्, अभ्यास (Practise)। **वाङ्मयं**–वाचिकम्, वाणीरूपी (Literature)। **उच्यते**–कथ्यते, कहा जाता है (To be said)। **हितम्**–हितकारकं, हितकारी। **स्वाध्याय**–अध्ययनाम् पढ़ाई (Study)। **वाक्यम्**–वचनम्, वचन (Sentence)।

संस्कृते भावार्थः (Summary)

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥ 8॥

यत् **वाक्यम्** श्रोतृणाम् हृदये उद्वेगं न करोति, सत्ययुक्तं **प्रियं** हितकारि च भवति, तस्य **वाचनम्** तथा च स्वाध्यायस्य अभ्यासः एव **वाङ्मयं** तपः कथ्यते।

समासाः (Compounds)

अनुद्वेगकरम् – न उद्वेगम् करोति इति (उपपद तत्पुरुषः)।
स्वाध्यायाभ्यसनम् – स्वाध्यायः च अभ्यसनम् चतयोः समाहारः (द्वन्द्वः)।
वाङ्मयं तपः – वाङ्मयतपः (कर्मधारयः)।

सन्धि-विच्छेदः (Disjoin Sandhi)

स्वाध्यायाभ्यसनं – स्व + अध्याय + अभ्यसनम् (दीर्घ सन्धिः)।
चैव – च + एव (वृद्धि सन्धिः)।
वाङ्मय – वाक् + मयम् (व्यंजन सन्धिः)।
तप उच्यते – तपः + उच्यते (विसर्ग सन्धिः)।

प्रश्नाः (Questions)

(I) एकपदेन उत्तरत–

(*i*) 'यत्' कस्य विशेषणम्? (*ii*) 'स्वाध्यायः' किम् भवति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत–

वाक्यं कीदृशम् स्यात्?

(III) भाषिककार्यम्–

(*i*) 'तपः' पदम् कस्मिन् लिङ्गे?
(क) नपुंसकलिङ्गे (ख) पुल्लिङ्गे (ग) स्त्रीलिङ्गे

(*ii*) 'कथ्यते' इत्यर्थे अत्र किम् पदं प्रयुक्तम्?
(क) यत् (ख) तप् (ग) उच्चते (घ) चैत्र

(*iii*) 'उद्वेगकरम्' इति विपर्ययरूपे किं पदं प्रयुक्तम्?
(क) सत्यं (ख) प्रियम् (ग) हितम् (घ) अनुद्वेगकरम्

(*iv*) 'उच्यते' इति पदे का मूलधातुः?
(क) वच् (ख) उच् (ग) वद् (घ) उद्

उत्तराणि– (I) (*i*) वाक्यस्य। (*ii*) तपः।
(II) वाक्य अनुद्वेगकरं, सत्यं, प्रियं हितं च स्यात्।
(III) (*i*) (क) नपुंसकलिङ्गे। (*ii*) (ग) उच्यते। (*iii*) (घ) अनुद्वेगकरम्। (*iv*) (क) वच्।

प्रश्ननिर्माणम्–स्थूलपदानि आश्रितस्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत–

(*i*) वाङ्मयं **तपः** उच्यते। (*ii*) **अनुद्वेगकरं** वाक्यम् एव वदेत्।
(*iii*) **प्रियहितं** वाक्यम् अपि वाङ्मयं तपः भवति। (*iv*) **स्वाध्यायः** अपि तपः भवति।

उत्तराणि– (*i*) किम् (*ii*) कीदृशम् (*iii*) कीदृशम् (*iv*) कः।

विशेष्यैः सह विशेषणानां चयनं कुरुत–

विशेषणम्	**विशेष्यः**	**विशेषणम्**	**विशेष्यः**
(*i*) सत्यम्	– वचनम्	(*iii*) हितम्	– तपः
(*ii*) वाङ्मयम्	– वाक्यम्	(*iv*) मधुरम्	– वाक्यम्

उत्तराणि– (*i*) वाक्यम् (*ii*) तपः (*iii*) वाक्यम् (*iv*) वचनम्

पाठ्यपुस्तकस्य अभ्यासः
(अनुप्रयोगः)

प्रश्नाः (Questions)

1. पठितः पाठः। इदानीं क्रीडामः। सर्वे छात्राः वर्गद्वये विभक्ताः स्युः। वाल्मीकिवर्गः व्यासवर्गश्च। वाल्मीकिवर्गात् एकः प्रश्नं पृच्छति व्यासवर्गात् च कश्चित् उत्तरति। पुनश्च व्यासवर्गात् प्रश्नः पृच्छ्यते वाल्मीकिवर्गात् उत्तरं दीयते। शिक्षकः अंकप्रदानं करोति। सर्वाधिकान् अंकान् लभमानः वर्गः विजेता घोष्यते।

वाल्मीकिवर्गः	**व्यासवर्गः**
(क) 'अम्भोजः' इति शब्दस्य पर्यायः कः?	....
(ख)	'शरत्कालीन' इति कस्य अर्थः?
(ग) सरस्वत्याः कोशः कथं वर्धते?	....
(घ)	कया समं चक्षुर्न विद्यते?
(ङ) कीदृशी वाणी पुरुषं प्रसन्नं करोति?	....
(च)	शारदा सर्वत्र कुत्र निवसेत्?
(छ) 'उद्वेगकरम्' इत्यस्य कः विलोमः?	....
(ज)	सप्तमे श्लोके 'चतुर्थांशः' कस्य अर्थः?
(झ) 'ऊहः' शब्दस्य कः विलोमः?	....
(ञ)	बुद्धेः प्रथमः गुणः कः?

उत्तराणि– (क) कमलम् (ख) शारदस्य (ग) व्ययतः (घ) विद्यया (ङ) मधुरभाषिण
(च) वदनाम्बुजे (छ) अनुद्वेगकरम् (ज) 'पादः' इत्यस्य (झ) अपोहः (ञ) शुश्रूषा।

2. वर्गद्वये एकः किमपि वाक्यं श्यामपट्टे लिखति, अन्यस्य वर्गस्य च छात्रः तत्र स्थूलपदमाश्रित्य प्रश्नं पृच्छति–

वाल्मीकिवर्गः	**व्यासवर्गः**
(क) **शारदा** सर्वदा अस्माकं समीपे वसेत्?	....
(ख)	**भारत्याः** कोशः अपूर्वः।
(ग) **सत्येन** समं सुखं नास्ति?	....
(घ)	मधुरभाषिणी वाणी **पुरुषं** प्रह्लादयति।
(ङ) पठने **अक्षराणां** स्पष्टता स्यात्।	....
(च)	स्वाध्यायः अपि **तपः**।
(छ) **शुश्रूषायाः** अर्थः 'श्रोतुमिच्छा'।	....
(ज)	शिष्यः सब्रह्मचारिभिरपि **विद्यां** गृह्णाति।
(झ) **रागस्य** विलोमः त्यागः।	....
(ञ)	पठनस्य **षट्** गुणाः।

उत्तराणि– (क) का? (ख) कस्याः? (ग) केन? (घ) कम्? (ङ) केषाम्?
(च) किम्? (छ) कस्याः? (ज) काम्? (झ) कस्य? (ञ) कति?

3. श्लोकमाश्रित्य समुचितक्रमेण अन्वयं पूरयत–

(क) हे भारति! तव अयम् कोशः कः अपि (*i*) .... विद्यते। (अयम्) व्ययतः (*ii*) ...., सञ्चयात् च (*iii*) .... आयाति।

(ख) विद्यासमम् (*i*) .... न अस्ति, सत्यसमं तपः न (*ii*) ...., रागसमम् (*iii*) .... न अस्ति (*iv*) .... सुखं न अस्ति।

(ग) यत् वाक्यम् (*i*) .... सत्यम्। (*ii*) .... (तथा) स्वाध्याय-अभ्यसनम् च एव (*iii*) .... तपः उच्यते।

उत्तराणि– (क) (*i*) अपूर्वः (*ii*) वृद्धिमायाति (*iii*) क्षयम्। (ख) (*i*) चक्षुः (*ii*) अस्ति (*iii*) दुःखम् (*iv*) त्यागसमं।
(ग) (*i*) अनुद्वेगकरम् (*ii*) प्रियहितं (*iii*) वाङ्मयं।

4. विपरीतभावात्मकं वाक्यांशम् लिखत–

(क) व्ययतः वृद्धिमायाति ....

(ख) नास्ति रागसमं दुःखम् ....

(ग) नास्ति त्यागसमं सुखम् ....

(घ) आचार्यात्पादमादत्ते ....

उत्तराणि– (क) क्षयमायाति सञ्चयात् (ख) नास्ति त्यागसमं सुखम् (ग) नास्ति रागसमम् दुःखम् (घ) पादम् शिष्यः स्वमेधया।

5. क्रियां, लिङ्गम्, अव्ययं विभक्तिं वा आधृत्य भिन्नप्रकृतिकं पदं चिनुत–

यथा–

(क) आयाति, भारति, प्रह्लादयति, विद्यते।

(ख) चक्षुः, तपः, रसः, दुःखम्।

(ग) आचार्यात्, व्ययात्, सञ्यात्, क्रियात्।

(घ) सर्वदा, यत्, तथा, सन्निधिम्।

(ङ) श्रवणम्, ग्रहणम्, चन्दनम्, धारणम्।

उत्तराणि– (क) भारति (ख) रसः। (ग) क्रियात् (घ) सन्निधिम् (ङ) चन्दनम्।

6. रेखाचित्रम् पूरयत–

(क) यथा–

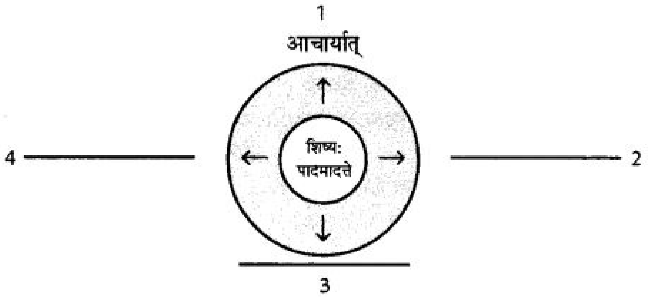

(ख) यथा–

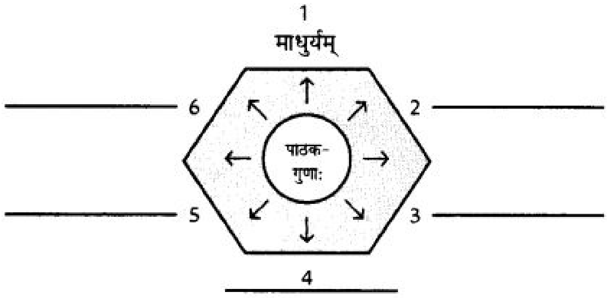

(ग) उदाहरणानि अनुसृत्य गुणक्रमेण सरणिं पूरयत–

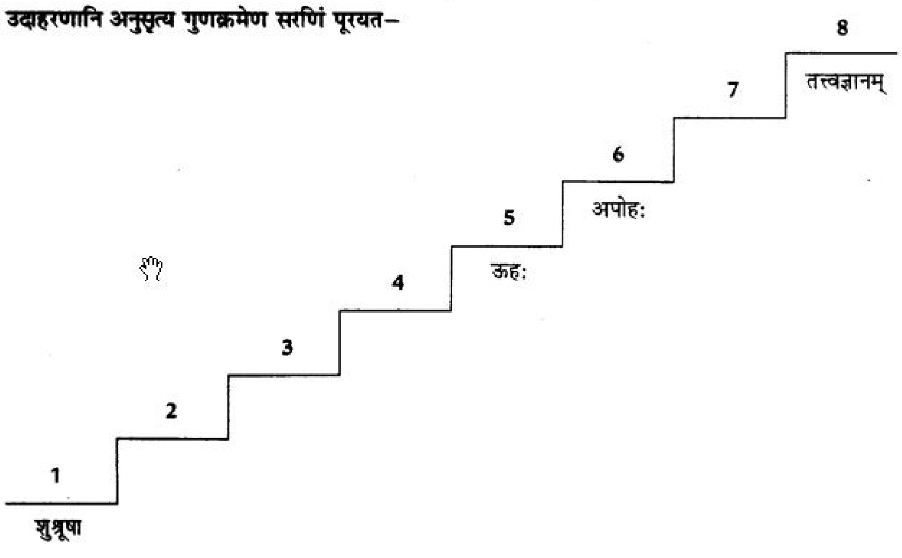

उत्तराणि– (क) (2) स्वमेधया (3) कालेन (4) सब्रह्मचारिभि:
(ख) (2) अक्षरव्यक्ति: (3) पदच्छेद: (4) सुस्वर: (5) धैर्यम् (6) लयसमर्थम्
(ग) (2) श्रवणं (3) ग्रहणं (4) धारणम् (7) अर्थविज्ञानम्

7. अत्र पठितेभ्य: श्लोकेभ्य: कानिचित् पदानि सन्ति। तेषां विशेषणानि अध: मञ्जूषायां दत्तानि। तत: उपयुक्तं विशेषणं चित्वा विशेष्येण सह योजयत–

(*i*) .... वाणी
(*ii*) .... सलिलम्
(*iii*) .... छाया
(*iv*) .... तप:
(*v*) .... शारदा
(*vi*) .... कोश:
(*vii*) .... चक्षु:
(*viii*) .... वाक्यम्

मञ्जूषा

शीतला, वाङ्मयम्, शीतलम्, विद्यासमं, अपूर्व:, प्रियहितम्, सर्वदा, मधुरभाषिणी

उत्तराणि– (*i*) मधुरभाषिणी (*ii*) शीतलम् (*iii*) शीतला (*iv*) वाङ्मयम्
(*v*) सर्वदा (*vi*) अपूर्व: (*vii*) विद्यासमम् (*viii*) प्रियहितम्।

8. अधोलिखितपङ्क्तिषु स्थूलाक्षरपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् अर्थं चिनुत–

(क) स्वाध्यायाभ्यसनं चैव **वाङ्मयं** तप: उच्यते।
(1) साहित्यम् (2) वाचिकम् (3) वाक्युक्तम्

(ख) आचार्यात् **पादम्** आदत्ते।
(1) श्लोकस्य पङ्क्तिम् (2) चरणम् (3) चतुर्थांशम्

(ग) **माधुर्यम्** अक्षरव्यक्ति: पदच्छेदस्तु सुस्वर:।
(1) शर्करायुक्तम् (2) कोमलतया वर्णोच्चारणम् (3) मधुरताया: अभाव:

(घ) **सर्वदा** सर्वदाऽस्माकं सन्निधं क्रियात्।
(1) सर्वं ददाति इति (2) सर्वाधिका (3) सर्वं वदति इति

(ङ) **शुश्रूषा** श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा
(1) सेवा (2) श्रोतुम् इच्छा (3) श्वश्रू:

उत्तराणि– (क) (2) वाचिकम् (ख) (3) चतुर्थांशम् (ग) (2) कोमलतया वर्णोच्चारणम्
(घ) (1) सर्वं ददाति इति (ङ) (2) श्रोतुम् इच्छा।

9. समानभावभयी: पङ्क्ती: योजयत–

(*i*) **नास्ति विद्यासमं चक्षु:।** — क. मुखकमले निवासं कुर्यात्। — (*i*) ....
(*ii*) व्ययत: वृद्धिमायाति। — ख. वाङ्माधुर्यात् नान्यदस्ति प्रियत्वम्। — (*ii*) ....
(*iii*) वदनाम्बुजे सन्निधिं क्रियात्। — ग. सर्वस्य लोचनं शास्त्रम्। — (*iii*) ....
(*iv*) मधुरभाषिणी वाणी पुरुषं प्रह्लादयति। — घ. शिक्ष्यते सहपाठिभि:। — (*iv*) ....
(*v*) पादं सब्रह्मचारिभि: — ङ. दत्ता भवति विस्तृता। — (*v*) ....

उत्तराणि– (*i*) ग (*ii*) ङ (*iii*) क (*iv*) ख (*v*) घ।

10. शब्दानाम् अर्थैः सह मेलनं कार्यम्–

	शब्दाः	अर्थाः
यथा –	शुश्रूषा	चतुर्थांशम्
	ऊहः	निवासम्
	अपोहः	मुखम्
	पादम्	वाणी
	सन्निधिम्	श्रोतुमिच्छा
	वदनम्	सरस्वती
	वाक्	पक्षे तर्कः
	भारती	विपक्षे तर्कः
उत्तराणि–	शब्दाः	अर्थाः
	शुश्रूषा	श्रोतुमिच्छा
	ऊहः	पक्षे तर्कः
	अपोहः	विपक्षे तर्कः
	पादम्	चतुर्थांशम्
	सन्निधिम्	निवासम्
	वदनम्	मुखम्
	वाक्	वाणी
	भारती	सरस्वती

योग्यता-विस्तारः
(न परीक्षाकृते)

(क) लेखक परिचयः

एते श्लोकाः विभिन्नेभ्यः ग्रन्थेभ्यः संकलिताः। प्रथमश्लोकद्वयम् सुभाषितरत्नभाण्डागारतः, तृतीयः, पंचमः सप्तमः च श्लोकः महाभारतात्, चतुर्थः कामन्दकीयनीतेः, षष्ठः पाणिनिशिक्षातः, अष्टमः च गीतायाः।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)—ये श्लोक विभिन्न ग्रन्थों से संकलित किए गए हैं। पहले दो श्लोक 'सुभाषितरत्नभाण्डागारः' नामक पुस्तक से लिए गए हैं। तीसरा, पाँचवाँ और सातवाँ श्लोक 'महाभारत' से; चौथा श्लोक 'कामन्दकीयनीति' से; छठा 'पाणिनिशिक्षा' से और आठवाँ श्लोक 'गीता' से लिया गया है।

(ख) भाव-विकासः

माधुर्यम् – श्रवणमधुरता, कोमलतया वर्णोच्चारणम्।
पदच्छेदः – पदानां पार्थक्येनोच्चारणम्।
अक्षरव्यक्तिः – कोमलत्वेऽप्यक्षराणां स्पष्टतयोच्चारणम्।
लयसमर्थञ्च – धैर्यं तच्च स्वरताललयादिप्रदर्शने।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)

भाव-विकास

मधुरता – सुनने में मिठास, कोमलता से वर्णों का उच्चारण।
अक्षरों की स्पष्टता – कोमल होने पर भी अक्षरों का स्पष्टता से उच्चारण।
पदच्छेद – पदों को अलग-अलग करके उच्चारण।
लयसमर्थं – स्वर-ताल-लय आदि के उच्चारण में धैर्य होना।

अधोलिखिताः पठनस्य दोषाः

गीती शीघ्री शिरः कम्पी यथालिखितपाठकः।
अनर्थज्ञोऽल्पकण्ठश्च षडेते पाठकाऽधमाः॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–निम्नलिखित पढ़ने के दोष हैं—

गाते हुए पढ़ना, शीघ्र पढ़ना, सिर हिलाते हुए पढ़ना, जैसा लिखा गया हो वैसा ही पढ़ने वाला, **अर्थ को न** जानने वाला, धीमी आवाज वाला, ये छः प्रकार के अधम पाठक होते हैं।

विद्याविषयकसूक्तयः

ज्ञातिभिर्वण्ट्यते नैव, चौरेणापि न नीयते।
न दानेन क्षयं याति, विद्यारत्नं महाधनम्॥ 1॥
रूपयौवनसम्पन्ना, विशालकुलसम्भवाः।
विद्याहीना न शोभन्ते, निर्गन्धा इव किंशुकाः॥ 2॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–विद्या से सम्बन्धित सूक्तियाँ—

1. विद्यारूपी धन महाधन है जो सम्बन्धियों द्वारा बाँटा नहीं जाता, चोरों द्वारा चुराया नहीं जाता, दान देने पर घटता भी नहीं है।
2. रूप तथा यौवन से सम्पन्न होने पर भी तथा विशाल कुल में उत्पन्न होने पर भी विद्याहीन व्यक्ति उसी प्रकार **सुशोभित नहीं** होते जिस प्रकार गंधहीन पलाश के फूल।

सरस्वतीविषयकसूक्तयः

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहंसवधूर्मम।
मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती॥
इदमन्धन्तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्।
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–सरस्वतीविषयक सूक्तियाँ—

ब्रह्माजी के मुख रूपी कमल से उत्पन्न सबको प्रकाशित करने वाली हंसवाहिनी सरस्वती मेरे मन में सदा निवास करें। ये तीनों लोक घोर अज्ञानान्धकार में डूब जाएँ यदि शब्दात्मक ज्योति सारे संसार को प्रकाशित न करे।

उच्चारणविषयकपद्यम्

व्याघ्री यथा हरेत् पुत्रान् दंष्ट्राभ्यां न च पीडयेत्।
भीता पतनभेदाभ्यां तद्वद् वर्णान् प्रयोजयेत्॥

एवम् विद्याविषयकपद्यानां सरस्वतीविषयकपद्यानां च संकलनं क्रियताम्।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–**उच्चारणविषयक पद्य**–

जिस प्रकार व्याघ्री पुत्रों को दाँतों से उठाकर ले जाती है तथा पीड़ा नहीं पहुँचाती तथा उनके गिरने से डरती है। उसी प्रकार वर्णों का प्रयोग करना चाहिए।

भाषा-विस्तार :

(क) तृतीयान्तपदं सम-सदृश-ऊन-मिश्रशब्दैः समस्यते।

यथा – मात्रा समः—मातृसमः (बालकः)
मात्रा सदृशः—मातृसदृशः
माषेण ऊनम्—माषोणम्
गुडेन मिश्रः—गुडमिश्रः।
अत्र तृतीयातत्पुरुषः समासः वर्तते।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–तृतीया विभक्तियुक्त पद का सम-सदृश-ऊनम् मिश्र आदि शब्दों के साथ समास होता है; जैसे–

मात्रा समः — मातृसमः (माता के समान)

मात्रा सदृशः — मातृसदृशः (माता के समान)

माषेण ऊनम् — माषोणाम् (एक मासा से कम)

गुडेन मिश्रः — गुडमिश्रः (गुड़ से मिला हुआ)

इन सब में तृतीया तत्पुरुष समास है।

(ख)
1. कुम्भं करोति इति कुम्भकारः।
2. निशां करोति इति निशाकरः।
3. प्रियं वदति इति प्रियंवदः।
4. भयं करोति इति भयंकरः।
5. द्वाभ्यां पिबति इति द्विपः (हस्ती)।
6. उरसा गच्छति इति उरगः (सर्पः)।

अत्र उपपदतत्पुरुषः समासः।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–

1. जो घड़ा बनाता है वह कुम्भकार (कुम्हार)।
2. जो रात्रि करे वह निशाकर (चन्द्रमा)।
3. जो प्रिय बोलता है वह प्रियंवद।
4. जो भय उत्पन्न करता है वह भयंकर।
5. जो दो से पीता है वह द्विप (हाथी)।
6. जो छाती से सरककर चलता है वह उरग (सर्प)।

इन सब शब्दों में उपपद तत्पुरुष है। जिन शब्दों में अंतिम शब्द क्रियापद हो, वहाँ उपपद तत्पुरुष होता है।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तराणि

1. (अ) **अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रदत्तान् प्रश्नान् उत्तरत–** **5**

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति!
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात्॥

(I) एकपदेन उत्तरत– **½ × 2 = 1**

(*i*) सरस्वत्याः कोशः कीदृशः वर्तते?

(*ii*) विद्या कथं क्षयम् आयाति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 1 = 1**

भारत्याः कोशः कथं वर्धते?

(III) भाषिककार्यम्– **1 × 3 = 3**

(*i*) अस्मिन् श्लोके सम्बोधनपदं किमस्ति?

(क) अपूर्वः (ख) कोशः (ग) भारति (घ) तव

(*ii*) 'अपूर्वः' इति विशेषणपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) को (ख) कोऽपि (ग) अयं (घ) कोशाय

(*iii*) 'व्ययतः' इति पदस्य विपरीतभावात्मकं शब्दं चित्वा लिखत।

(क) सञ्चयात् (ख) वृद्धिः (ग) क्षयात् (घ) कोऽपि

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–तृतीया विभक्तियुक्त पद का सम-सदृश-ऊनम् मिश्र आदि शब्दों के साथ समास होता है; जैसे–

मात्रा समः — मातृसमः (माता के समान)

मात्रा सदृशः — मातृसदृशः (माता के समान)

माषेण ऊनम् — माषोणाम् (एक मासा से कम)

गुडेन मिश्रः — गुडमिश्रः (गुड़ से मिला हुआ)

इन सब में तृतीया तत्पुरुष समास है।

(ख)
1. कुम्भं करोति इति कुम्भकारः।
2. निशां करोति इति निशाकरः।
3. प्रियं वदति इति प्रियंवदः।
4. भयं करोति इति भयंकरः।
5. द्वाभ्यां पिबति इति द्विपः (हस्ती)।
6. उरसा गच्छति इति उरगः (सर्पः)।

अत्र उपपदतत्पुरुषः समासः।

हिंदी अनुवाद (Hindi Translation)–

1. जो घड़ा बनाता है वह कुम्भकार (कुम्हार)।
2. जो रात्रि करे वह निशाकर (चन्द्रमा)।
3. जो प्रिय बोलता है वह प्रियंवद।
4. जो भय उत्पन्न करता है वह भयंकर।
5. जो दो से पीता है वह द्विप (हाथी)।
6. जो छाती से सरककर चलता है वह उरग (सर्प)।

इन सब शब्दों में उपपद तत्पुरुष है। जिन शब्दों में अंतिम शब्द क्रियापद हो, वहाँ उपपद तत्पुरुष होता है।

परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोत्तराणि

1. (अ) **अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रदत्तान् प्रश्नान् उत्तरत–** **5**

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति!
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात्॥

(I) एकपदेन उत्तरत– **½ × 2 = 1**

(*i*) सरस्वत्याः कोशः कीदृशः वर्तते?

(*ii*) विद्या कथं क्षयम् आयाति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 1 = 1**

भारत्याः कोशः कथं वर्धते?

(III) भाषिककार्यम्– **1 × 3 = 3**

(*i*) अस्मिन् श्लोके सम्बोधनपदं किमस्ति?

(क) अपूर्वः (ख) कोशः (ग) भारति (घ) तव

(*ii*) 'अपूर्वः' इति विशेषणपदं कस्मै प्रयुक्तम्?

(क) को (ख) कोऽपि (ग) अयं (घ) कोशाय

(*iii*) 'व्ययतः' इति पदस्य विपरीतभावात्मकं शब्दं चित्वा लिखत।

(क) सञ्चयात् (ख) वृद्धिः (ग) क्षयात् (घ) कोऽपि

उत्तराणि– **(I)** (*i*) अपूर्वः (*ii*) सञ्चयात्

(II) भारत्याः कोशः व्ययतः वृधते।

(III) (*i*) (ग) भारति (*ii*) (घ) कोशाय (*iii*) (क) सञ्चयात्।

(आ) अधोलिखितं श्लोकं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरत– **5**

न तथा शीतलसलिलं न चन्दनरसो न शीतला छाया।
प्रह्लादयति च पुरुषं, यथा मधुरभाषिणी वाणी॥

(I) एकपदेन उत्तरत– **½ × 4 = 2**

(*i*) कीदृशी वाणी पुरुषं प्रह्लादयति ?

(*ii*) मधुरभाषिणी वाणी कं प्रसीदति ?

(*iii*) का शीतला पुरुषं तथा न प्रहृष्टं करोति यथा मधुरवाणी ?

(*iv*) कस्य रसः नरं तथा न प्रह्लादयति यथा मधुरावाक् ?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 1 = 1**

किं-किं वस्तु पुरुषं तथा न प्रह्लादयति यथा मधुरभाषिणी वाणी ?

(III) निर्देशानुसारम् उत्तरत– **½ × 4 = 2**

(*i*) 'शीतला छाया' अनयोः पदयोः विशेषणपदं किम् ?

(क) छाया (ख) शीतल (ग) शीतला (घ) छायाम्

(*ii*) 'प्रह्लादयति' अस्य कर्तृपदं किम् अस्ति ?

(क) पुरुषं (ख) वाणी (ग) मधुर (घ) मधुरभाषिणी

(*iii*) 'जलम्' अस्य किं पर्यायपदं प्रयुक्तम् अत्र ?

(क) आपः (ख) रसः (ग) छाया (घ) सलिलम्

(*iv*) 'दुःखीयति' अस्य किं विपर्ययपदम् अस्मिन् श्लोकं वर्णितम् ?

(क) प्रह्लादयति (ख) ह्लादयति (ग) प्रसीदति (घ) वाणी

उत्तराणि– **(I)** (*i*) मधुरभाषिणी। (*ii*) पुरुषम्। (*iii*) छाया। (*iv*) चन्दनस्य।

(II) शीतलसलिलं, चन्दनरसः शीतला च छाया पुरुषं तथा न प्रह्लादयति यथा मधुरभाषिणी वाणी।

(III) (*i*) (ग) शीतला (*ii*) (ख) वाणी (*iii*) (घ) सलिलम् (*iv*) (क) प्रह्लादयति।

2. निम्नलिखितकथनयोः भावम् मञ्जूषातः उपयुक्तशब्दैः पूरयत–

(I) अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। **½ × 4 = 2**
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

यत् (*i*) .... श्रोतॄणाम् हृदये उद्वेगं न करोति, सत्ययुक्तं (*ii*) .... हितकारि च भवति, तस्य (*iii*) .... तथा च स्वाध्यायस्य अभ्यासः एव (*iv*) .... तपः उच्यते।

मञ्जूषा– | वाङ्मयं, प्रियम्, वाक्यम्, वाचनम् |

उत्तराणि– (*i*) वाक्यम् (*ii*) प्रियम् (*iii*) वाचनम् (*iv*) वाङ्मयं।

(II) आचार्यात्पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया। **½ × 4 = 2**
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः।

शिष्यस्य शिक्षाप्राप्तेः चत्वारि साधनानि सन्ति। सः शिक्षायाः प्रथमं चतुर्थांशं (*i*) .... प्राप्नोति। द्वितीयं चतुर्थांशं च (*ii*) .... लभते। एवमेव अन्यत् चतुर्थांशं (*iii*) .... प्राप्नोति शेषं चतुर्थांशम् च (*iv*) .... प्राप्नोति।

मञ्जूषा– | वाङ्मयं, वाक्यम्, स्वमेधया, सब्रह्मचारिभिः, आचार्यात्, वाचनम्, प्रियम्, समयेन। |

उत्तराणि– (*i*) आचार्यात् (*ii*) स्वमेधया (*iii*) समयेन (*iv*) सब्रह्मचारिभिः।

3. अधोलिखितश्लोकयोः अन्वयम् मञ्जूषायाः उचितपदैः पूरयित्वा लिखत– **2 × 2 = 4**

(I) नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः। **½ × 4 = 2**
नास्ति रागसमं दुखं नास्ति त्यागसमं सुखम्॥

अन्वयः विद्यासमं (*i*) .... न अस्ति, सत्यसमं तपः न (*ii*) .... रागसमं (*iii*) .... न अस्ति, (*iv*) .... सुखम् न अस्ति।

मञ्जूषा– | त्यागसमं, दुःखम, अस्ति, चक्षुः। |

उत्तराणि– (*i*) चक्षुः (*ii*) अस्ति (*iii*) दुःखम् (*iv*) त्यागसमं

(II) न तथा शीतलसलिलं न चन्दनरसो न शीतला छाया। **½ × 4 = 2**
प्रह्लादयति च पुरुषं, यथा मधुरभाषिणी वाणी॥

अन्वयः न शीतलसलिलं न (*i*) .... न शीतला छाया च (*ii*) .... पुरुषं (*iii*) .... (*iv*) .... मधुरभाषिणी वाणी।

मञ्जूषा– | दुखम्, प्रहलादयति, यथा, त्याग समं, चन्दनरसः, अस्ति, पशुः, तथा। |

उत्तराणि– (*i*) चन्दन रसः (*ii*) तथा (*iii*) प्रह्लादयति (*iv*) यथा

4. उदाहरणानुसारं रेखाङ्कितपदम् आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत– **1 × 4 = 4**

(i) **भारत्याः कोशः अपूर्वः अस्ति।**

(क) काः (ख) कस्याः (ग) कस्य (घ) कासाम्।

(ii) **भारत्याः कोशः अपूर्वः।**

(क) कः (ख) काः (ग) कीदृशः (घ) कीदृशाः।

(iii) **शारदा सर्वदा अस्माकं समीपे वसेत्।**

(क) का (ख) काः (ग) कः (घ) किम्।

(iv) **स्वाध्यायः अपि तपः।**

(क) कः (ख) किम् (ग) काः (घ) का।

उत्तराणि– (*i*) (ख) कस्याः (*ii*) (ग) कीदृशः (*iii*) (क) का (*iv*) (ख) किम्।

5. **अधोलिखितेषु पङ्क्तिेषु स्थूलाक्षरपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् अर्थं चित्वा लिखत–** **1 × 4 = 4**

यथा– सर्वदा शारदा अस्माकं वदनाम्बुजे संन्निधिं क्रियात्।

(*i*) सर्वं ददाति इति (*ii*) सदैव (*iii*) सर्वतः

उत्तराणि– (*i*) सर्वं ददाति इति।

(i) **सर्वदा** सर्वदाऽस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् 1

(*i*) सर्वदायिका (*ii*) सर्वाधिका (*iii*) निरन्तरम्

(ii) **शुश्रूषा** श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा 1

(*i*) सेवा (*ii*) श्वश्रूः (*iii*) श्रोतुमिच्छा

(iii) आचार्यात्पादमादत्ते, **पादं** शिष्यः स्वमेधया। 1

(*i*) चरणम् (*ii*) चतुर्थांशम् (*iii*) श्लोकस्य पंक्तिम्

(iv) **प्रह्लादयति** च पुरुषं, यथा मधुरभाषिणी वाणी। 1

(*i*) दुःखीयति (*ii*) प्रसादयति (*iii*) पाठयति

उत्तराणि– (i) (*i*) सर्वदायिका (ii) (*iii*) श्रोतुमिच्छा (iii) (*iii*) चतुर्थांशम् (iv) (*ii*) प्रसादयति।

6. **अधोलिखितयोः श्लोकयोः भावम् उपयुक्तशब्दैः पूरयत–** **1 × 4 = 4**

(शब्दाः श्लोकात् चयनीयाः)

आचार्यात् पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।
कालेन पादमादत्ते पादं सब्रह्मचारिभिः॥

भावः– शिष्यस्य शिक्षाप्राप्तेः (*i*) .... साधनानि सन्ति। स शिक्षायाः प्रथमं चतुर्थांशं (*ii*) .... प्राप्नोति। द्वितीयं चतुर्थांशं (*iii*) .... आप्नोति। तृतीयं समयक्रमेण लभते (*iv*) .... च सब्रह्मचारिभिः विन्दति।

उत्तराणि– (*i*) चत्वारि (*ii*) आचार्यात् (गुरोः) (*iii*) स्वबुद्ध्या (*iv*) चतुर्थं।

7. **अधोलिखितश्लोकयोः भावम् उपयुक्तपदैः पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां लिखत–** **1 × 4 = 4**

(उचितपदानां चयनं श्लोकात् एव कुरुत)

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते॥

भावः– यत् वाक्यं श्रोतॄणां हृदये (*i*) .... न करोति, सत्ययुक्तं (*ii*) .... हितकारि च भवति, तस्य वाचनं तथा (*iii*) .... अभ्यासः एव वाङ्मयम् (*iii*) .... उच्यते।

उत्तराणि– (*i*) व्याकुलतां (*ii*) प्रियं (*iii*) स्वाध्यायस्य (*iv*) तपः।

8. **अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा प्रश्नान् उत्तरपुस्तिकायाम् उत्तरत–** **5**

नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं, नास्ति त्यागसमं सुखम्॥

प्रश्नाः

(I) एकपदेन उत्तरत– **½ × 2 = 1**

(*i*) केन समं तपः नास्ति? (*ii*) विद्यासमं किं नास्ति?

(II) पूर्णवाक्येन उत्तरत– **1 × 1 = 1**

सर्वाधिकं सुखं कस्मात् प्राप्यते?

(III) भाषिककार्यम्– **1 × 3 = 3**

(*i*) 'सुखम्' इत्यस्य किं विपरीतार्थकम् पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) दु:खम् (ख) समम् (ग) तप: (घ) सत्यम्

(*ii*) 'तुल्यम्' इति स्थाने किं पदम् अत्र प्रयुक्तम्?

(क) चक्षु: (ख) दु:खम् (ग) तप: (घ) समम्

उत्तराणि– (I) (*i*) सत्येन (*ii*) चक्षु:।

(II) सर्वाधिकम् सुखम् त्यागात् प्राप्यते।

(III) (*i*) (क) दु:खम् (*ii*) (घ) समम्।

मूल्यपरक प्रश्ना: (VBQs)

वाक्यानि पठित्वा वाक्याधारितान् प्रश्नान् उत्तरत–

प्रश्ना: (*i*) 'सर्वदा सर्वदा अस्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।' अत्र कस्या: सानिध्यस्य प्रार्थना अस्ति?

(*ii*) 'क्षयमायाति सञ्चयात्।' इति श्लोकांशे सञ्चयात् कस्य क्षयस्य वर्णनम् वर्तते?

(*iii*) 'नास्ति त्यागसमं सुखम्।' अत्र क: सर्वोत्तमं सुखं कथितम्?

(*iv*) 'मधुरभाषिणी वाणी पुरुषं प्रह्लादयति।' संसारे मनुष्यस्य प्रसन्नताया: कारणं किमस्ति?

(*v*) 'वाङ्मयं तप: उच्यते।' इति श्लोकांशे स्वाध्याय: कीदृशं तप: कथितम्।

उत्तराणि– (*i*) शारदाया: (*ii*) विद्याधनस्य (*iii*) त्याग: (*iv*) मधुरभाषिणीवाणी (*v*) वाङ्मयम्।